तीतुस

1 पौलुस की ओर से जिसे परमेश्वर के चुने हुए लोगों को उनके विश्वास में सहायता देने के लिये और हमारे धर्म की सचाई के सम्पूर्ण ज्ञान की रहनुमाई के लिए भेजा गया है; 2वह मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ कि परमेश्वर के चुने हुओं को अनन्त जीवन की आस बँधे। परमेश्वर ने, जो कभी झूठ नहीं बोलता, अनादिकाल से अनन्त जीवन का वचन दिया है। 3उचित समय पर परमेश्वर ने अपने सुसमाचार को उपदेशों के द्वारा प्रकट किया। वही सुसन्देश हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की आज्ञा से मुझे सौंपा गया है।

4हमारे समान विश्वास में मेरे सच्चे पुत्र तीतुस को: हमारे परमपिता परमेश्वर और उद्धारकर्ता मसीह यीशु की ओर से अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

क्रेते में तीतुस का कार्य

5मैंने तुझे क्रेते में इसलिये छोड़ा था कि वहाँ जो कुछ अधूरा रह गया है, तू उसे ठीक ठाक कर दे और मेरे आदेश के अनुसार हर नगर में बुज़ुर्गों को नियुक्त करे। 6उसे नियुक्त तभी किया जाये जब वह निर्दोष हो। एक पत्नी व्रती हो। उसके बच्चे विश्वासी हों और अनुशासनहीनता का दोष उन पर न लगाया जा सके। तथा वे निरंकुश भी न हों। 7निरीक्षक को निर्दोष तथा किसी भी बुराई से अछूता होना चाहिये। क्योंकि जिसे परमेश्वर का काम सौंपा गया है, उसे अड़ियल, चिड़चिड़ा और दाखमधु पीने में उसकी रूचि नहीं होनी चाहिए। उसे झगड़ालू, नीच कमाई का लोलुप नहीं होना चाहिये 8बल्कि उसे तो अतिथियों की आवभगत करने वाला, नेकी को चाहने वाला, विवेक-पूर्ण, धर्मी, भक्त, तथा अपने पर नियंत्रण रखने वाला होना चाहिये। 9उसे उस विश्वास करने योग्य संदेश को दृढ़ता से धारण किये रहना चाहिये जिसकी उसे शिक्षा दी गयी है, ताकि वह लोगों को सद्शिक्षा देकर उन्हें प्रबोधित कर सके। तथा जो इसके विरोधी हों, उनका खण्डन कर सके।

10यह इसलिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से लोग विद्रोही हो कर व्यर्थ की बातें बनाते हुए दूसरों को भटकाते हैं। मैं विशेष रूप से यहूदी पृष्ठभूमि के लोगों का उल्लेख कर रहा हूँ। 11उनका तो मुँह बन्द किया ही जाना चाहिये। क्योंकि वे जो बातें नहीं सिखाने की हैं, उन्हें सिखाते हुए घर के घर बिगाड़ रहे हैं। बुरे रास्तों से धन कमाने के लिये ही वे ऐसा करते हैं। 12एक क्रेते के निवासी ने अपने लोगों के बारे में स्वयं कहा है: "क्रेते के निवासी सदा झूठ बोलते हैं, वे जंगली पशु हैं, वे आलसी हैं, पेटू हैं।" 13यह कथन सत्य है, इसीलिये उन्हें बलपूर्वक डाँटो-फटकारो ताकि उनका विश्वास पक्का हो सके। 14यहूदियों के पुराने वृत्तान्तों पर और उन लोगों के आदेशों पर, जो सत्य से भटक गये हैं, कोई ध्यान मत दो। 15पवित्र लोगों के लिये सब कुछ पवित्र है, किन्तु अशुद्ध और जिन में विश्वास नहीं है, उनके लिये कुछ भी पवित्र नहीं है। 16वे परमेश्वर को जानने का दावा करते हैं। किन्तु उनके कर्म दर्शाते हैं कि वे उसे जानते ही नहीं। वे घृणित और आज्ञा का उल्लंघन करने वाले हैं। तथा किसी भी अच्छे काम को करने में वे असमर्थ हैं।

सच्ची शिक्षा का अनुसरण

2 किन्तु तुम सदा ऐसी बातें बोला करो जो सच्ची शिक्षा के अनुकूल हों। 2वृद्ध पुरुषों को शिक्षा दो कि वे शालीन और अपने पर नियन्त्रण रखने वाले बनें। वे गंभीर, विवेकी, प्रेम और विश्वास में दृढ़ और धैर्यपूर्वक सहनशील हों। 3इसी प्रकार वृद्ध महिलाओं को सिखाओ कि वे पवित्रजनों के योग्य उत्तम व्यवहार वाली बनें। निन्दक न बनें तथा बहुत अधिक दाखमधु पान की लत उन्हें न हो। वे अच्छी अच्छी बातें सिखाने वाली बनें 4ताकि युवतियों को अपने-अपने बच्चों और पतियों से प्रेम करने की सीख दे सकें। 5जिससे वे संयमी, पवित्र, अपने-अपने घरों की देखभाल करने वाली, दयालु, अपने पतियों की आज्ञामानने वाली बनें जिससे परमेश्वर के वचन की निन्दा न हो। 6इसी तरह युवकों को सिखाते रहो कि वे संयमी बनें। 7तुम अपने आप को हर बात में आदर्श बना कर दिखाओ। तेरा उपदेश शुद्ध और गम्भीर होना चाहिये। 8ऐसी सद्वाणी का प्रयोग करो, जिसकी आलोचना न की जा सके ताकि तेरे विरोधी लज्जित हों क्योंकि उनके पास तेरे विरोध में बुरा कहने को कुछ नहीं होगा।

9दासों को सिखाओ कि वे हर बात में अपने स्वामियों की आज्ञा का पालन करें। उन्हें प्रसन्न करते रहें। उलट

कर बात न बोलें। 10चोरी चालाकी न करें। बल्कि
सम्पूर्ण विश्वसनीयता का प्रदर्शन करें। ताकि हमारे
उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की हर प्रकार से
शोभा बढ़े।11क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह सब मनुष्यों
के उद्धार के लिए प्रकट हुआ है। 12इससे हमें सीख
मिलती है कि हम परमेश्वर विहीनता को नकारें और
सांसारिक इच्छाओं का निषेध करते हुए ऐसा जीवन
जीयें जो विवेकपूर्ण नेक, भक्ति से भरपूर और पवित्र
हो। आज के इस संसार में 13आशा के उस धन्य दिन
की प्रतीक्षा करते रहें जब हमारे परम परमेश्वर और
उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा प्रकट होगी। 14उसने
हमारे लिये अपने आपको दे डाला। ताकि वह सभी
प्रकार की दुष्टताओं से हमें बचा सके और अपने चुने
हुए लोगों के रूप में अपने लिये हमें शुद्ध कर ले–हमें,
जो उत्तम कर्म करने को लालायित हैं।

15इन बातों को पूरे अधिकार के साथ कह और
समझाता रह, उत्साहित करता रह और विरोधियों को
झिड़कता रह। ताकि कोई तेरी अनसुनी न कर सके।

जीवन की उत्तम रीति

3 लोगों को याद दिलाता रह कि वे राजाओं और
अधिकारियों के अधीन रहें। उनकी आज्ञा का
पालन करें। हर प्रकार के उत्तम कार्यों को करने के
लिये तैयार रहें। 2किसी की निन्दा न करें। शांति–प्रिय
और सज्जन बनें। सब लोगों के साथ अच्छा व्यवहार
करें।

3यह मैं इसलिये बता रहा हूँ क्योंकि हम भी, एक
समय था, जब मूर्ख थे। आज्ञा का उल्लंघन करते थे।
भ्रम में पड़े थे। तथा वासनाओं एवम् हर प्रकार के
सुख–भोग के दास बने थे। हम दुष्टता और ईर्ष्या में
अपना जीवन जीते थे। हम से लोग घृणा करते थे तथा
हम भी परस्पर एक दूसरे को घृणा करते थे।

4किन्तु जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की मानवता
के प्रति करुणा और प्रेम प्रकट हुए 5उसने हमारा
उद्धार किया। यह हमारे निर्दोष ठहराये जाने के लिये
हमारे किसी धर्म के कामों के कारण नहीं हुआ बल्कि
उसकी करुणा द्वारा हुआ। उसने हमारी रक्षा उस स्नान
के द्वारा की जिसमें हम फिर पैदा होते है और पवित्र
आत्मा के द्वारा नये बनाये जाते हैं। 6उसने हम पर
पवित्र आत्मा को हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा
भरपूर उँडेला है। 7अब परमेश्वर ने हमें अपनी
अनुग्रह के द्वारा निर्दोष ठहराया है ताकि जिसकी हम
आशा कर रहे थे उस अनन्त जीवन के उत्तराधिकार
को पा सकें। 8यह कथन विश्वास करने योग्य है और
मैं चाहता हूँ कि तुम इन बातों पर डटे रहो ताकि वे जो
परमेश्वर में विश्वास करते हैं, अच्छे कर्मों में ही लगे
रहें। ये बातें लोगों के लिए उत्तम और हितकारी हैं।

9वंशावलि सम्बन्धी विवादों, व्यवस्था सम्बन्धी झगड़ों
झमेलों और मूर्खतापूर्ण मतभेदों से बचा रह क्योंकि
उनसे कोई लाभ नहीं, वे व्यर्थ हैं। 10जो व्यक्ति फूट
डालता हो, उससे एक या दो बार चेतावनी देकर अलग
हो जाओ। 11क्योंकि तुम जानते हो कि ऐसा व्यक्ति मार्ग
से भटक गया है और पाप कर रहा है। उसने तो स्वयं
अपने को दोषी ठहराया है।

याद रखने की कुछ बातें

12मैं तुम्हारे पास जब अरतिमास या तुखिकुस को
भेजूँ तो मेरे पास निकुपुलिस आने का भरपूर जतन
करना क्योंकि मैंने वहीं सर्दियाँ बिताने का निश्चय कर
रखा है। 13वकील जेनास और अप्पुलोस को उनकी
यात्रा के लिये जो कुछ आवश्यक हो, उसके लिये तुम
भरपूर सहायता जुटा देना ताकि उन्हें किसी बात की
कोई कमी न रहे। 14हमारे लोगों को भी सत्कर्मों में
लगे रहना सीखना चाहिये। उनमें से भी जिनको अत्यधिक
आवश्यकता हो, उसको पूरी करना ताकि वे विफल न
हों।

15जो मेरे साथ हैं, उन सब का तुम्हें नमस्कार। हमारे
विश्वास के कारण जो लोग हमसे प्रेम करते हैं, उन्हें
भी नमस्कार।

परमेश्वर का अनुग्रह तुम सब के साथ रहे।